श्री गुरु श्रीचन्द्र भगवान जी की आरती

ओम जय श्री चन्द्र देवा, स्वामी जय श्री चन्द्र देवा।
सुर नर मुनिजन ध्यावत 2, सन्तन की सेवा हरि ओम् ।।१।।

कलियुग घोर अंधकार देखकर, धरियो अवतारा।
स्वामी धरियो शंकर रूप सदाशिव 2, हर अपरम्पारा-हरि ओम् ।।२।।

योगेन्द्र अवधूत सदा तुम, बालक ब्रम्हचारी। स्वामी बालक
भेष उदासीन पालक 2, महिमा अति भारी-हरि ओम् ॥३॥

रामदास गुरू अर्जुन, सोढी कुल भूषण। स्वामी सोढी-
सेवत चरण तुम्हारे 2, मिट गये सब दूषण-हरि ओम् ॥४॥

ऋद्धि सिद्धि के दाता, भगतन के त्राता। स्वामी भगतन-
रोग शोक सब काटो 2, शरणी जो आता हरि ओम् ॥५॥

भगत गिरि संन्यासी, चरणां विच गिरयो। स्वामी चरणां-
काट दियो भवबन्धन 2, शिष्य अपना करियो-हरि ओम् ॥६॥

उदासीनो के मालिक पालक, दुःख घालक।
स्वामी पालक- आचार्य शिर धार्य 2, जग के संचालक हरि ओम ॥७॥

बेदी वंश रखियो जग भीतर, कृपा कर भारी।
स्वामी कृपा-धर्म चन्द उपदेशियो 2, जावां, बलिहारी-हरि ओम् ॥८॥

गौर वर्ण तन भस्मी, कान में सजे मुद्रा।
स्वामी कान-बावरियां शिर शोभित 2, देख कलियुग उघरा-हरि ओम् ॥९॥

पद्मासन को बांध, योग को लियो धारो।

स्वामी योग- ऐसो रूप तुम्हारो 2, मन में नित धारो-हरि ओम् ॥१०॥

जो जन आरती निशदिन बाबे की गावे।

स्वामी बाबे-बसे बैकुण्ठ नरनारी 2, सुख यश फल पावे-हरि ओम् ।।११।।

राम नारायण आरती, बाबे की साजी।

स्वामी बाबे-बाल यति श्री चंद्र जी 2, जन पर रहो राजी-हरि ओम् ॥१२॥

सौजन्य

युवराज मिश्रा

अध्यक्ष

उदासीन गृहस्थ समाज उत्थान परिषद

(बिहार शाखा)

निवास:–धमौल,नवादा